विषय सूची

अनुवादक की ओर से xvii

परिचय: सुंदर चीज़ें 1

भाग एक

उस मैजिक शॉप में जाना

एक: सचमुच का जादू 13

दो: विश्राम में शरीर 25

तीन: सोचने के बारे में सोचना 57

चार: पनपते दुख 79

पांच: तीन मनोकामनाएं 105

भाग दो

मस्तिष्क के रहस्य

छः अपने आप को लगा देना 131

सात: अस्वीकार्य 151

आठ: जीवन कोई ब्रेन-सर्जरी नहीं है 175

नौ: बिना सल्तनत का सुलतान 201

भाग तीन

हृदय के रहस्य

दस: दूसरों के लिए दे दो 217

ग्यारह: दिल की वर्णमाला 229

बारह: छलकती करुणा 245

तेरह: भगवान के दर्शन 261

अनुवादक की ओर से

जिस पुस्तक की प्रशंसा और अनुशंसा में दीपक चोपड़ा से लेकर दलाई लामा तक आध्यात्मिक जगत के अनेक प्रबुद्ध जनों ने और विश्व के अन्य अनेक मनीषियों, विद्वानों, लेखकों, चिकित्सकों तथा विविध क्षेत्रों के अग्रगण्य जनों ने इतना कुछ लिख दिया हो, उसके बारे में अब मेरा कुछ कहना नहीं बनता है।

अतः, मैं पाठकों को केवल इतना बता कर अपनी बात पूरी कर रहा हूं कि चूंकि यह पुस्तक एक न्यूरोसर्जन द्वारा लिखी गई है इसलिए प्रसंग के अनुसार इसमें अनेक स्थानों पर दिमाग़ और दिल की संरचना और उनके अंगो के बारे में उल्लेख आया है। लेखक द्वारा उन अंगो और रोगों के लिए प्रयुक्त अंग्रेज़ी शब्दों के स्थान पर अनुवाद में हिंदी शब्द न दे कर मैंने उन्हें अंग्रेज़ी में ही ज्यों का त्यों *इटैलिक* में लिख दिया है। ऐसा इसलिए किया गया है क्योंकि उन अंगों के व उनके रोगों के हिंदी शब्द या तो उपलब्ध नहीं हैं और अगर उपलब्ध हैं भी तो वे बहुत अप्रचलित या दुरूह हैं।

इसलिए अनुवाद को अबाध व प्रवाहमय बनाए रखने के लिए मुझे यही उचित लगा कि उन्हें ज्यों का त्यों इटैलिक में लिख दिया जाए। हालांकि, ऐसे शब्दों के बाद मैंने संक्षेप में उनका खुलासा भी अधिकांश जगहों पर किया है। इससे पाठक को सरलता होगी और पढ़ना भी प्रवाहमय बना रहेगा।

लेखक को उनके बचपन में एक मैजिक शॉप में रुथ नामक एक महिला मिली थी जिसने उन्हें सचमुच का वह जादू दिया था जिससे वे अपने जीवने में जो चाहें वह पा सकते थे। लेखक ने उस जादू का अभ्यास किया और वह सब हासिल कर लिया जो अपनी मनोकामनाओं की सूची में उन्होंने लिखा था। चूंकि रुथ ने उनसे यह वादा लिया था कि वे इस जादू को दूसरों तक पहुंचायेंगे, इसलिए वही जादू—सचमुच का जादू और सबसे बड़ा जादू—वे इस पुस्तक के जरिए अब आपको देने जा रहे हैं।

अचलेश चंद्र शर्मा
मेरठ

परिचय:
सुंदर चीज़ें

स्कल्प को—यानी कपाल को, जब खोपड़ी से खींच कर खोला जाता है तो वह तब एक ख़ास तरह की आवाज़ करता है—वैल्क्रो की तरह, जब उसके एक हिस्से को खींच कर दूसरे से अलग किया जा रहा होता है। यह आवाज़ काफ़ी ज़ोर से होती है, चिड़चिड़ाहट भरी लगती है और थोड़ी दुख भरी भी। दिमाग़ की सर्जरी करते समय जो आवाज होती हैं और जो गंध उसमें से आती हैं उनके बारे में मेडिकल कॉलेजों में कभी कुछ बताया-सिखाया नहीं जाता है। उन्हें इसकी भी एक कक्षा लगानी चाहिए। खोपड़ी में छेद करते समय ड्रिल की घरघराहट। हड्डी काटने की आरी की आवाज़ जो ऑपरेशन रूम को तब बुरादे जैसी गंध से भर देती है जब ड्रिल से किए गए छेदों को जोड़ने वाली एक रेखा उकेरी जाती है। दिमाग़ के आवरण के रूप वाली और किसी उसे किसी बाहरी आघात से बचाने वाली *ड्यूरा* से अलग किए जाते समय खोपड़ी द्वारा की जाने वाली चट-चट की आवाज़ जैसे कह रही होती है कि वह उससे

अलग होना नहीं चाहती। फिर, *ड्यूरा* पर धीरे-धीरे चलाई जाती हुई कैंचियों की आवाज़। इस तरह, दिमाग़ जब उघाड़ दिया जाता है तब आप देख सकते हैं कि वह दिल की हर धड़कन के साथ कैसे थिरकता है, और कभी-कभी तो ऐसा भी लगता है कि आप उसके कराहने की उस आवाज़ को भी सुन सकते हैं जो कि वह खुद के इस प्रकार अनावृत कर दिए जाने पर, उघाड़ दिए जाने पर विरोध स्वरूप कर रहा हो क्योंकि ऑपरेटिंग रूम की तेज़ रोशनी में उसका रहस्य, उसकी गोपनीयता सबके सामने उजागर हो गई होती है।

सर्जरी के लिए ले जाए जाने से पहले अस्पताल का गाउन पहने हुए बड़े से बिस्तर पर लेटा हुआ वह लड़का एकदम छोटा बच्चा लग रहा था।

"मेरी नानी ने मेरे लिए प्रार्थना की है, और आपके लिए भी।"

उसकी इस बात पर उसकी मां की सांसों की आवाज़ में आई तेज़ी को मैं सुन सकता था। मैं जानता था कि वह अपना रोना छिपा कर अपने बच्चे को बहादुर बेटा बनाने की कोशिश कर रही थी। अपने लिए। और, शायद मेरे लिए भी। मैंने उस लड़के के बालों को सहलाया। उसके बाल तांबई रंग के, लंबे और मुलायम थे—बिल्कुल बच्चों के जैसे। उसने मुझे बताया कि कुछ ही दिन पहले उसका 'हैप्पी बर्थ डे' मनाया गया था।

"तो बच्चे, क्या मैं एक बार फिर बताऊं कि आज क्या होने वाला है, या तुम तैयार हो?" जब मैं उसे 'बच्चे' या 'दोस्त' कह कर संबोधित करता था तो उसे अच्छा लगता था।

"बिल्कुल, मैं जानता हूं कि मैं सो जाऊंगा और फिर आप मेरे सिर में से वह ख़तरनाक चीज़ निकाल देंगे, और वह मुझे फिर कभी तक़लीफ़ नहीं देगी। फिर मैं अपनी मम्मा और नानी से मिलूंगा।"

वह "ख़तरनाक चीज़" थी *मेडुलोब्लास्टोमा*—बच्चों में सबसे अधिक होने वाला और तेज़ी से फैलने वाला ब्रेन ट्यूमर जो कि खोपड़ी के आधार *पोस्टीरियर फ़ोसा* में हुआ करता है। *मेडुलोब्लास्टोमा* का सही- सही उच्चारण करना तो बड़ों के लिए भी मुश्किल होता है, फिर वह तो चार साल से भी छोटा बच्चा था, हालांकि वह काफ़ी तेज़ था।

पीडियाट्रिक ब्रेन ट्यूमर वाक़ई ख़तरनाक होते हैं, इसलिए उसने जो इसका नाम ''ख़तरनाक'' रखा था वह मुझे ठीक ही लगा था। *मेडुलोब्लास्टोमा* बड़े बेढंगे रूप व आकार के होते हैं और अक्सर दिमाग़ की सममिति में ऐसी जगह पर होते हैं जहां आसानी से पहुंचा नहीं जा सकता। इनका आरंभ और इनका पनपना मस्तिष्क के *सेरीबेलम* के दो *लोब्स* के बीच में होता है और फिर वे न केवल *सेरीबेलम* को दबाते चले जाते हैं बल्कि *ब्रेनस्टेम* को भी दबाते चले जाते हैं जिससे अंततः दिमाग़ में घूमने वाले द्रव का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। मैंने अब तक जितनी सुंदरतम चीज़ें देखी हैं, मस्तिष्क उनमें से एक है, और इसके रहस्यों को खोजना और इसके उपचार के तरीके ढूंढना तो एक ऐसा असाधारण अवसर होता है जिसे मैंने कभी यूं ही नहीं जाने दिया।

''मुझे लगता है कि तुम तैयार हो। इसलिए मैं अपना सुपर-हीरो वाला नकाब पहनने जा रहा हूं और अब हम *ब्राइट* रूम में मिलेंगे।''

वह मेरी तरफ़ देख कर मुस्कुराया। सर्जरी के दौरान पहने जाने वाले मास्क और ऑपरेशन रूम—ये शब्द सुन कर कोई भी घबरा सकता है। इसलिए मैं आज उनकी जगह 'सुपर-हीरो वाला नकाब' और 'ब्राइट रूम' जैसे शब्द प्रयोग कर रहा हूं। दिमाग़ एक बड़ी विचित्र चीज़ है, लेकिन चार साल के बच्चे को मैं उसका जुगराफ़िया समझाने नहीं जा रहा हूं हालांकि जिन सबसे अधिक बुद्धिमान रोगियों और लोगों से मैं अभी तक मिला हूं उनमें से अधिकतर बच्चे ही थे। बच्चों का हृदय खुला होता है। वे आपको बता सकते हैं उन्हें किस चीज़ से डर लगता है, क्या चीज़ उन्हें खुशी देती है, और आपकी कौन सी बात उन्हें अच्छी लगती है और कौन सी नहीं लगती। उनका कोई छिपा हुआ एजेंडा नहीं हुआ करता है, और यह अनुमान लगाने की आवश्कता भी आपको कभी नहीं पड़ती है कि वे सचमुच कैसा महसूस कर रहे हैं।

मैं उसकी मम्मा और नानी की ओर मुड़ कर बोला, ''हमारी टीम में से कोई न कोई आपको बताता रहेगा कि क्या हो रहा है। मुझे उम्मीद है कि हम उसे पूरी तरह निकाल देंगे और कोई परेशानी नहीं आयेगी।''

यह किसी सर्जन द्वारा कहा जाने वाला कोई ऐसा वक्तव्य मात्र नहीं था जो कि घर वाले सुनना चाहते हैं, बल्कि यह मेरा मंतव्य भी था कि साफ़-सुथरी और बेहतरीन सर्जरी द्वारा उसके समूचे *ट्यूमर* को निकाल बाहर किया जाए, और उसका एक छोटा सा हिस्सा लैब को यह देखने के लिए भेज दिया जाए कि वह 'ख़तरनाक चीज़' कितनी ख़तरनाक है।

मैं जानता हूं कि उसकी मम्मा और नानी बहुत घबराई हुई हैं। मैंने एक-एक करके उनके हाथों को अपने हाथों में लिया ताकि उन्हें ढाढस बंधा सकूं और विश्वास दिला सकूं। ऐसा करना कभी आसान नहीं होता है। उस बच्चे को सुबह-सुबह होने वाला सिरदर्द घर वालों के लिए सबसे बड़ी चिंता बना हुआ था। उसकी मम्मा मुझ पर भरोसा करती है। नानी भगवान पर भरोसा करती है। मैं अपनी टीम पर भरोसा करता हूं।

एनेस्थीसियोलोजिस्ट की गिनती जब उस बच्चे को सुला देती है तब मैं उसका सिर एक *हैड फ्रेम* में रख देता हूं और उसे उलटा लिटा देता हूं। फिर मैं उसके बालों को कतरना शुरू करता हूं। हालांकि आमतौर पर सर्जरी से पहले की तैयारी नर्स ही किया करती है लेकिन मैं यह श्रेयस्कर मानता हूं कि सिर के बाल काटने का काम मैं खुद ही करूं। इसे मैं कुछ इस तरह करता हूं जैसे यह कोई धार्मिक अनुष्ठान हो। मैं धीरे-धीरे उसके सिर के बाल काटता हूं। मैं उस अनमोल लडके के बारे में सोचता हूं और सर्जरी के बारे में भी विस्तार से सोचता जाता हूं। मैं उसके बालों का पहला गुच्छा काटता हूं और उसे अपने सहायक को सौंप देता हूं कि उसकी मम्मा को दिए जाने के लिए वह उसे एक छोटी सी थैली में रख दे। चूंकि यह उसका पहला *हेयर कट* था इसलिए उसकी मम्मा के लिए वह बहुत महत्वपूर्ण था, यह मैं जानता था। बचपन की कुछ ऐसी घटनाएं होती है जिन्हें आप याद रखना चाहते हैं—पहला *हेयर कट*। पहला दांत टूटना। स्कूल का पहला दिन। पहली बार साइकिल चलाना। लेकिन, पहली *ब्रेन सर्जरी* इस सूची में कभी नहीं रही थी।

मैं इतने आहिस्ता से उसकी मुलायम लटों को पहली बार काटता हूं जैसे उसे लग रहा हो कि पहली बार बाल कटना कैसा लगता है। अपने मन में मैं उसे बड़ी सी मुस्कराहट के साथ देख सकता हूं जिसमें उसके सामने के पहले दांत के टूटने से एक खाली जगह बन गई है। मैं उसे किंडरगार्टन में जाते हुए देखता हूं, इतना बड़ा स्कूल बैग अपनी पीठ पर लादे हुए कि जितना बड़ा वह खुद है और इसलिए वह स्कूल बैग एक तरफ़ को ढलक गया है। मैं उसे पहली बार साइकिल चलाते हुए देखता हूं—आज़ादी की वह पहली पुलक, तेज़ी से पैडल चलाने पर हवा से लहराते उसके बाल। उसके बालों को कतरते हुए मुझे अपने बच्चों का ख़याल आता है। इस लड़के के साथ पहली-पहली बार होने वाली सभी बातों के दृश्य मुझे साफ़-साफ़ दीख रहे हैं। लेकिन, मैं नहीं देखना चाहता भविष्य के वे दृश्य जिनमें वह जांच के लिए अस्पताल लाया जा रहा है, उसके कैंसर का इलाज किया जा रहा है और अतिरिक्त सर्जरी की जा रही है। बचपन के *ब्रेन ट्यूमर* की सर्जरी में बच जाने वाले के रूप में, उस बच्चे की जांच और देखभाल हमेशा करनी होगी, जो हालत उसकी पिछले समय में रही है वह हालत मैं उसके भविष्य में देखना नहीं चाहता। मितली आना, उल्टी होना। गिर जाना। सुबह तड़के नींद खुल जाना, कराहते-चीखते हुए अपनी मम्मा को बुलाना क्योंकि वह 'ख़तरनाक चीज़' उसके मस्तिष्क को दबा रही होती है और उसे दर्द दे रही होती है। उसके जीवन में पहले ही इतना कष्ट आ चुका है कि उसे अब और कष्ट नहीं होना चाहिए। आहिस्ते-आहिस्ते मैं उसके इतने बाल काट लेता हूं कि मैं अपना काम कर सकूं। फिर मैं उसके सिर के नीचे की तरफ़ दो बिंदु बनाता हूं जिनमें से हम छेद करेंगे और फिर मैं एक सीधी रेखा खींचता हूं।

ब्रेन सर्जरी कठिन होती है, लेकिन *पोस्टीरियर फ़ोसा* में की जाने वाली सर्जरी और भी कठिन होती है, और छोटे बच्चे में की जाने वाली तो कुछ और भी कठिन होती है। यह ट्यूमर बड़ा है और इसकी सर्जरी करने का काम बहुत मेहनत वाला और बारीक है। इसमें आंखें माइक्रोस्कोप के जरिए घंटों तक एक ही चीज़ पर केंद्रित रहती हैं।

सर्जन के तौर पर हमें सिखाया जाता है कि ऑपरेशन के दौरान हम अपने शरीर की मांगों को पूरा करने में न रहें। ऑपरेशन के दौरान हम बाथरूम नहीं जाते हैं, कुछ खाते नहीं हैं। हमें सिखाया जाता है कि उस दौरान अगर हमारी कमर दुखने लगे या मांस पेशियों में कहीं अकड़न-ऐंठन होने लगे तो हम उस पर ध्यान न दें, उसे अनदेखा कर दें। मुझे याद है वह दिन जब मैं पहली बार ऑपरेशन रूम में एक सहायक के रूप में एक प्रसिद्ध सर्जन के साथ काम कर रहा था। वह सर्जन एक बहुत ही होशियार सर्जन के रूप में तो विख्यात थे लेकिन साथ ही ऑपरेशन के दौरान एक तेज़ तर्रार और किसी हद तक बदमिज़ाज सेनापति हो जाने के लिए कुख्यात भी थे। इसलिए, मैं डरा हुआ था, घबराया हुआ भी था। आपरेशन रूम में मेरी जगह चूंकि उनके बिल्कुल बराबर में थी इसलिए घबराहट में मेरे माथे पर पसीना आ गया था और मेरे चेहरे पर नीचे की ओर सरकने लगा था। मास्क में मेरी सांस भारी चलने लगी थी और उसकी भाप मेरे चश्मे पर जमने लगी थी, इसलिए मैं न तो औज़ारों को ठीक से देख पा रहा था और न ही आपरेशन की जगह को। उस मुकाम तक पहुंचने के लिए मैने बहुत मेहनत की थी, बहुत सारी बाधाएं पार की थीं, और उस दिन मेरा सपना साकार होने जा रहा था कि मैं सर्जरी कर रहा था, लेकिन मुझे तो ठीक से कुछ दीख ही नहीं रहा था। फिर, कुछ ऐसा हुआ जिसे किसी ने सोचा भी नहीं था। मेरे पसीने की एक बड़ी सी बूंद *स्टराईल फ़ील्ड* में टपक गई। बस, वे सर्जन साहब तो उखड़ गए, आग-बबूला हो उठे। वह दिन मेरे जीवन का एक ख़ास दिन होने वाला था—सर्जरी में मेरा पहला दिन—लेकिन ऐसा होने के बजाय मैंने *सर्जिकल फ़ील्ड* को ही संदूषित कर दिया था और इसलिए, अगर दो टूक कहूं तो, मुझे लात मार कर ऑपरेशन रूम से बाहर निकाल दिया गया था। उस दिन जो मुझ पर गुज़री उसे मैं आज तक नहीं भुला पाया हूं।

लेकिन, आज मेरा माथा ठंडा है और मुझे सब कुछ साफ-साफ़ दीख भी रहा है। मेरी धड़कन मद्धम है और नियमित चल रही है। अनुभव बहुत कुछ सिखा देता है, और इसलिए अपने ऑपरेशन रूम में मैं कभी तानाशाह

नहीं बनता हूं, न ही कोई तेज़ तर्रार और बदमिज़ाज सेनापति। टीम का हर सदस्य मेरी एक आवश्यकता होता है और अपना महत्व रखता है। हर कोई अपने काम का ध्यान रखता है। *एनेस्थीसियोलोजिस्ट* रोगी के शरीर के रक्तचाप का, ऑक्सीजन का, उसके होश या बेहोशी का, और उसके हृदय की धड़कन की ताल का ध्यान रखता है। सर्जिकल नर्स औज़ारों का ध्यान रखती है और उन्हें उपलब्ध कराने का भी, और यह सुनिश्चित करती है कि जो कुछ मुझे चाहिए वह तत्काल उपलब्ध रहे। एक बड़ा सा थैला लड़के के सिर के नीचे की तरफ़ लटका दिया गया है ताकि बहने वाला खून व अन्य स्राव उसमें इकट्ठा होते रहें। यह थैला एक ट्यूब के जरिए एक बड़ी सी सक्शन मशीन के साथ जोड़ दिया गया है जो कि बहाव को लगातार मापती रहती है ताकि हम किसी भी समय यह जान सकें कि कितना खून बह चुका है।

जो सर्जन मेरे सहायक के रूप में काम कर रहा है वह प्रशिक्षण लेने वाला एक वरिष्ठ *रेज़िडेंट* है लेकिन वह इस समय केवल रक्त नलिकाओं पर, *ब्रेन टीशू* पर, और मेरी तरह ही *ट्यूमर* निकालने की बारीकियों पर ध्यान दे रहा है। इस समय हम कुछ और नहीं सोच सकते हैं—न अगले दिन की किसी योजना पर, न अस्पताल की राजनीति पर, न अपने बच्चों पर, और न ही घर पर चल रहे अपने संबंधों पर। सर्जरी का कार्य अत्यंत सावधानी व सतर्कता वाला होता है, और ध्यान जैसी एकाग्रता वाला भी। इसके लिए हम अपने दिमाग़ को अभ्यस्त बनाते हैं और फिर दिमाग़ हमारे शरीर को अभ्यस्त बना देता है। अगर आपकी टीम बढ़िया है, और सभी एक ही लय-ताल के साथ अपना काम कर रहे हैं, तब वह तालमेल कमाल का होता है। उस समय हम सब के तन-मन इस तरह से कार्य करते हैं जैसे वहां एक ही समन्वित बुद्धि कार्य कर रही हो।

मैं उस *ट्यूमर* का आख़री टुकड़ा निकाल रहा हूं जो कि दिमाग के भीतर की एक प्रमुख शिरा के साथ जुड़ा हुआ है। यह *पोस्टीरियर फ़ोसा वेनस सिस्टम* बेहद जटिल होता है, इतना जटिल कि उसे देख कर

वाक़ई आश्चर्य होता है। मैं बहुत सावधानी से *ट्यूमर* के बचे हुए टुकड़ों को निकाल रहा हूं और मेरा सहायक वहां से निकलने वाले स्रावों के *सक्शन* का काम कर रहा है। तभी, उसका ध्यान एक पल के लिए कहीं और चला जाता है और उसी पल उसका *सक्शन* एक शिरा को चीर देता है, और फिर जैसे सब कुछ थम जाता है।

तब, सब गड़बड़ होने लगता है।

चीरा लगी हुई शिरा में से बहता हुआ खून दिमाग़ की *रिसैक्शन केविटी* में भरने लगता है, और फिर खून इस बेचारे मासूम लड़के के सिर के घाव में से बाहर बहने लगता है। *एनेस्थीसियोलोजिस्ट* चिल्लाने लगता है कि बच्चे का ब्लड प्रेशर गिर रहा है और बहते खून के कारण वह इसे बनाए नहीं रख पा रहा है। मुझे शिरा पर बंद लगाना होगा ताकि खून का बहना बंद हो लेकिन वह शिरा तो खून के कटोरे में डूबी हुई है और इसलिए वह मुझे दिखाई ही नहीं दे रही है। अकेला मेरा *सक्शन* उस रक्त प्रवाह को नियंत्रित नहीं कर सकता लेकिन मेरे सहायक के तो हाथ ऐसे कांप रहे हैं कि वह मेरी कुछ भी मदद नहीं कर सकता है।

"उसका दिल बंद हो गया है।" *एनेस्थेयिलोजिस्ट* चिल्लाया। चूंकि इस बच्चे का सिर तो *हैड फ्रेम* में लॉक किया हुआ है और वह मुंह के बल लेटा हुआ है और उसके सिर का पिछला हिस्सा खुला हुआ है, इसलिए *एनेस्थिसियोलोजिस्ट* ऑपरेशन टेबल के बराबर में घुटनों के बल बैठ कर अपना एक हाथ लेटे हुए लड़के के नीचे छाती के तले ले जाकर दूसरे हाथ से उसकी कमर दबा-दबा कर, मरता क्या न करता जैसी स्थिति में, उसके हृदय को पंप करने की कोशिश करता है। द्रव अब बड़ी *आईवी लाइन* में डाला जा रहा है। दिल का प्रथम व प्रमुख कार्य होता है खून को पंप करना लेकिन यही चमत्कारी पंप जो कि शरीर में हर चीज़ का होना संभव करता है, वही थम गया है। मेरे सामने मेज़ पर लेटे हुए इस चार साल का लड़के का इतना खून बह रहा है कि वह मौत के मुंह में जाता लग रहा है। *एनेस्थीयोलोजिस्ट* जब-जब उसकी छाती पर पंप करता है, तब-तब घाव खून से और भर जाता है। हमें खून का बहना

बंद करना होगा वरना वह मर जायेगा। दिल द्वारा पंप किए जाने वाले खून का 15 प्रतिशत खून दिमाग़ में ही खप जाया करता है और इसलिए दिल के बंद हो जाने पर भी दिमाग़ जिंदा तो रहता है लेकिन केवल कुछ पलों के लिए ही। दिमाग़ को खून चाहिए होता है, और उससे भी अधिक ज़रूरी उसे ऑक्सीज़न चाहिए होती है लेकिन वह तो खून में ही होती है। इससे पहले कि दिमाग़ मर जाए, हमारे पास समय बहुत कम बचा है—दिल और दिमाग़ दोनों को एक दूसरे की ज़रूरत होती है।

पागलों की तरह मैं शिरा पर बंद लगाने की कोशिश कर रहा हूं, लेकिन वहां खून भरा हुआ होने के कारण उस शिरा को देख पाना संभव नहीं हो रहा है। हालांकि लड़के का सिर अपनी जगह फ़िक्स है लेकिन उसकी छाती का दबाना उसे थोड़ा तो हिला ही देता है। टीम भी जानती है और मैं भी जानता हूं कि हमारे पास समय ज़्यादा नहीं बचा है। *एनेस्थिीसियोलोजिस्ट* मेरी तरफ़ देखता है और मैं उसकी आंखों में उतर आए डर को देख रहा हूं ... शायद हम बच्चे को बचा न सकें। *कार्डियोपलमोनरी रिससुसाइटेशन (सीपीआर)* प्रक्रिया कुछ ऐसी होती है जैसे किसी कार को दूसरे गियर में डाल कर क्लच द्वारा स्टार्ट किया जा रहा हो—यह बहुत भरोसेमंद नहीं होती, ख़ास तौर से तब जब कि खून लगातार बह रहा हो।

बच्चे के सिर की खुली जगह से खून लगातार बाहर निकले जा रहा है। मैं जैसे अंधेरे में हाथ-पांव मार रहा हूं लेकिन खून को रोकने के लिए कुछ कर नहीं पा रहा हूं। मैं *हार्ट मॉनीटर* पर नज़र डालता हूं लेकिन वहां कोई धड़कन नहीं है। और तब, मैं एक ऐसी संभावना की ओर उन्मुख होता हूं जो कि किसी भी तर्क के, किसी भी कौशल के अंतर्गत नहीं आती। मैं वह काम करता हूं जो मुझे कई दशक पहले सिखाया गया था—किसी मैडिकल कॉलेज में नहीं, रेज़ीडेंसी में भी नहीं, बल्कि कैलिफ़ोर्निया के रेगिस्तान की एक छोटी सी मैजिक शॉप के पिछले कमरे में।

मैं अपने दिमाग़ को शांत करता हूं।

मैं अपने शरीर को ढीला छोड़ देता हूं।

मैं अपने मानस में उस खोई हुई नस को देखता हूं, यानी उस नस को मैं अपने मन की आखों से देखता हूं जो कि इस बच्चे के *न्यूरोवसकुलर* तंत्र के अंतर्व्यास के अंदर मौजूद है। मैं आंख मींच कर अंदर टटोलता हूं लेकिन जानता हूं कि जीवन में बहुत कुछ ऐसा भी है जिसे हम शायद ही देख पाते हैं, और यह भी कि हम में से हर कोई ऐसे आश्चर्यजनक कार्य करने की क्षमता रखता है जिसे कि हम संभावनाओं से बहुत दूर मान बैठे होते हैं। हम अपने भाग्य को स्वयं नियंत्रित करने वाले हैं, और इसलिए मैं इस बात को अस्वीकार देता हूं कि चार साल के इस बच्चे की नियति यह है कि आज यह इस ऑपरेशन टेबल पर दम तोड़ दे।

मैं एक खुली हुई क्लिप लेकर खून के उस कटोरे में हाथ डालता हूं, उस शिरा को बंद करता हूं, और फिर हौले-हौले अपना हाथ उससे बाहर निकाल लेता हूं।

खून बहना रुक जाता है, और फिर *हार्ट मॉनीटर* की 'ब्लिप' की आवाज़ मुझे ऐसे सुनाई देती है जैसे कहीं दूर से आ रही हो। शुरू में वह बहुत धीमी होती है, अनियमित व बेतरतीब रहती है, लेकिन जल्दी ही उसमें जान आने लगती है, अधिक दृढता आने लगती है—जैसा कि जीवन में प्रवेश करने वाले हर दिल के साथ होता है।

मुझे लग रहा है जैसे मेरे अपने दिल की धड़कन भी *मॉनिटर* की आवाज़ के साथ ताल से ताल मिला रही है।

ऑपरेशन पूरा हो जाने के बाद, उस लड़के के पहले हेयर कट में से ली गई लट को मैं उसकी मम्मा को सौंप दूंगा, और आशा करता हूं कि वह बच्चा भी *एनेस्थीसिया* के प्रभाव से शीघ्र ही बाहर आ जायेगा। वह पूरी तरह से सामान्य हो जायेगा। अड़तालीस घंटे बाद वह बात कर रहा होगा और हँस भी रहा होगा, और तब मैं उसे बता सकूंगा कि वह 'ख़तरनाक' चीज़ अब विदा हो चुकी है।